बिहार विधान-सभा वादवृत्त

मंगलवार, तिथि 10 जुलाई, 1990 ई०

(भाग-2 कार्यवाही प्रश्नोत्तर रहित)

भारत के संविधान के उपबन्ध के अनुसार एकत्र विधान-सभा का कार्य-वितरण।

सभा का अधिवेशन पटना के सभा सदन में मंगलवार तिथि 10 जुलाई, 1990 को पूर्वाह्न 11.00 बजे अध्यक्ष, **श्री गुलाम सरवर के सभापतित्व में प्रारंभ हुआ।**

पटना :
तिथि : 10 जुलाई, 1990 ई०

चन्द्रशेखर शर्मा
सचिव
बिहार विधान-सभा

अध्यक्ष : माननीय सदस्य श्री राजो सिंह आप अपना कटौती का प्रस्ताव वापस लेंगे ?

श्री राजो सिंह : अध्यक्ष महोदय, महिला शिक्षा के बारे में बड़ी लम्बी चौड़ी बातें हुई थी लेकिन इस संबंध में माननीय मंत्री ने कुछ भी नहीं कहा और न ही कोई घोषणा की इसलिये मैं अपना प्रस्ताव वापस नहीं लूंगा।

अध्यक्ष : प्रश्न यह है कि-

"इस शीर्षक की मांग 10 रुपये से घटायी जाये"

यह प्रस्ताव अस्वीकृत हुआ।

अध्यक्ष : प्रश्न यह है कि-

"शिक्षा, खेल और युवा सेवाएं तथा कला और संस्कृति" के संबंध में 31 मार्च, 1991 को समाप्त होने वाले वर्ष के भीतर भुगतान के दौरान में जो व्यय होगा, उसकी पूर्ति के लिए 12,46,00,95,500 (बारह अरब छयालीस करोड पन्चानवें हजार, पांच सौ) रु० से अनधिक राशि प्रदान की जाये।

प्रस्ताव स्वीकृत हुआ।

मांग स्वीकृत हुई।

सामान्य लोकहित के विषय पर विमर्श :

अध्यक्ष : अब मैं डा० जगन्नाथ मिश्र स०वि०स० द्वारा प्रस्तुत पटना शहर एवं आसपास के गांव में हैजा तथा गंदगी से उत्पन्न स्थिति के संबंध में दी गई सूचना पर विचार-विमर्श को लेता हूं।

श्री मुनेश्वरनाथ सिंह : अध्यक्ष महोदय, इस सदन के गठन हुये 4 महीने हो गये और लगभग चार महीने से हम और हमारे जैसे 50 लेजिस्लेचर बिना घर दरवाजा के पटना में बैठे हुये हैं। उनको बड़ी कठिनाईयों का सामना करना पड़ा है। न वे बोल सकते हैं, न अपनी बात रख सकते हैं, न पढ़ सकते है।, क्योंकि उनके रहने का ही कोई ठिकाना नहीं हैं तो सरकार द्वारा हमलोगों के घर की व्यवस्था आप करेंगे या सरकार घर की व्यवस्था करने में सक्षम नहीं है या हमलोग घर ही चले जायें।

डा० जगन्नाथ मिश्र : अध्यक्ष महोदय, मैं प्रस्ताव करता हूं कि पटना शहर एवं आसपास के गांवों में हैजा तथा गंदगी से उत्पन्न स्थिति के संबंध में यह सभा विचार करें। अध्यक्ष जी, कल भी सदन में चर्चा हुई और पिछले 2 जुलाई को भी चर्चा हुई और आज भी हम सबों ने देखा है कि पटना की हालत दिनोंदिन सरकारी आश्वासनों के बावजूद बिगड़ती जा रही है। सरकार के स्तर से जो जानकारी प्राप्त हो रही है, उससे इसकी संपुष्टि होती जा रही है कि स्थिति बिगड़ती जा रही है। पिछले 2 जुलाई को माननीय स्वास्थ्य मंत्री श्री रघुनाथ झा और नगर विकास मंत्री श्री वृषिण पटेल ने प्रभावित क्षेत्रों का दौरा किया था और उन्होंने दौरे के क्रम में देखा और जानकारी दी थी कि 31, 32 और 34 वार्ड में काफी प्रभाव है और लगभग एक लाख लोग इस बीमारी से प्रभावित हो चुके हैं। इसके बाद पिछले 6 जुलाई को पटना के जिलाधिकारी ने सूचना दीं है कि पटना के 15 वार्ड बुरी तरह प्रभावित हैं और लगभग ढ़ाई लाख की आबादी प्रभावित

हो गई है । अध्यक्ष जी, सरकार की ओर से शुरू से ही जो जानकारी दी जा रही है, उससे स्पष्ट हो रहा है कि स्थिति काबू में आने के बजाय और बिगड़ती जा रही है और सरकार ने जो आश्वासन दिया था सदन को पिछले 2 जुलाई को, मुख्यमंत्री जी ने जो आश्वास दिया सदन को, उसके बाद स्थिति में कोई सुधार नहीं हुआ । सूचना यह मिलती है कि विभिन्न विभाग, जिनकी जिम्मेवारी है, उनके आपस में समन्वय स्थापित नहीं है पाया है, इस वजह से मुख्यमंत्री के आदेश, मंत्री नगर विकास के आदेश कार्यान्वित नहीं हो पा रहे हैं । मुख्यमंत्री ने घोषणा की, नगर विकास मंत्री ने घोषणा की थी कि पटना के बाहर से मजदूरों को मंगाया जाएगा और पटना की सफाई कराई जाएगी, लेकिन सूचना मिली है कि आज तक केवल 60 मजदूर पटना से बाहर के है और लगभग 100 पुलिस जवान सफाई कार्य में लगाये गये हैं । आज मैं कुछ इलाकों को देखने गया, सदन में चर्चा करने के पहले मैं चाहता था कि मैं इलाकों का दौरा कर लूं मैं सभी जगहों में नहीं जा सका । आज बिहार बंद होने की वजह से, बहुत बड़ी संख्या में तो नहीं, लेकिन कुछ नौजवान पटना सिटी एवं नालन्दा मेडिकल कॉलेज के रास्ते को जाम कर बैठे हुये थे । इस कारण हम वहां से लौट आये, लेकिन हमने स्थिति देखी है कि सरकार की घोषणा के बावजूद सफाई का काम बढ़ नहीं रहा है । हिन्दुस्तान दैनिक में जो समाचार छपा था उसकी चर्चा मैंने की थी । मंत्री जी ने बतलाया है कि कहां-कहां सफाई कार्य हुये हैं, कहां ब्लीचिंग पाउडर पड़े

है। हिन्दुस्तान समाचार-पत्र में जो तस्वीर छपी है हमने देखी है, निश्चित रूप से जहां ब्लीचिंग पाउडर लगने चाहिये थी-अभी भी गारबेज (कूड़े) जमा है सड़क के किनारे, महल्लों में जो सफाई होनी चाहिये थी, यह नहीं हो पा रही है। मैं इसको स्वीकार करता हूं कि सफाई कर्मचारी हड़ताल पर थे, इनकी वजह से भी गंदगी बढ़ती गई। पूर्व में भी इनकी हड़ताल हो चुकी है, कोई नई बात नहीं है, कर्मचारी की हड़ताल पिछले साल भी हुई थी। कोई-न-कोई उचित व्यवस्था चाहे होम-गार्ड के जरिये, दैनिक मजदूर के जरिये, पुलिस जवान के जरिये आवश्यक सेवा जारी रखी जाती रही थी, सफाई का काम किया जाता रहा था-पहली बार हड़ताल की अवधि में सरकार की ताफ से कोई प्रयास नहीं हुआ। प्रत्येक साल मई-जून के प्रारम्भ में जो नाले हुआ करते थे, उनकी सफाई हुआ करती थी, लेकिन निगम के सूत्रों से जानकारी मिली है सरकार की तरफ से जो मदद जो तत्परता पूर्व में होती थी वह नहीं हुई और मई-जून के महीने में नाले साफ नहीं कराये गयें सामान्य सफाई का काम भी हड़ताल के कारण रुक गया, फिर बिजली की संकट के वजह से, वर्षा होने की वजह से भी समस्यायें बढ़ती चली गई। बिजली संकट से पेयजल में थोड़ी बाधा हो गयी, लोगों की परेशानी बढ़ गई। डा० शकील ने खुद बयान दिया है कि कुएं का पानी पीने और लगातार गंदा पानी पीने की वजह से पटना सिटी की यह हालत होती चली आ रही थी। आपको जानकर आश्चर्य होगा, यह बात सरकार के सूत्र से कही जा रही है *"Meanwhile, a spokesman of the Polyclinic, which is running health centres in the city area*

has alleged that the biggest reason for the outbreak of the disease was the non-availability of safe drinking water to the people. According to Dr. Shakeel, who is supervising the health centres being run in ward numbers 33 and 36, still thousands of people of these areas were 'forced to drink water out of uncovered kuchcha wells' which he said was a big health hazard."

यह संपादकीय है। अध्यक्ष महोदय, आप देखेंगे कि किस तरह हिन्दुस्तान दैनिक के संपादकीय में 6 जुलाई को भी लिखा है, सरकार को चेतावनी समाचार पत्रों के माध्यम से दी गयी लेकिन जो स्थिति पायी उससे लगता है कि समाचार पत्रों से सरकार ने कोई सबक लेने की कोशिश नहीं की। बिहार की राजधानी पटना में अब तक महामारी से जितने लोग मरे उसकी रोकथाम के उपायों को अमल में लाने की जिम्मेवारी स्वास्थ्य विभाग पर है। इसलिए यह सरकार ....

श्री लालू प्रसाद : आपको हिन्दुस्तान के संपादक की बात पर विश्वास है, वह संपादक कौन है, वह तो आप जानते हैं।

श्री जगन्नाथ मिश्र : और अध्यक्ष महोदय, बड़े आश्चर्य की बात है कि हैजा के लिए जो दवाएं दी जा रही हैं वह खतरनाक साबित हो रही है इससे बीमारी घटने की बजाए दूसरी बीमारी हो रही है। सूचनाएं मिली हैं उसका अर्थ यह है कि "संज्ञाशून्य व्यवस्था मजबूर इंसानों की मौत से नहीं सिहरती, प्राय यही कारण है कि पटना सिटी व उसके आसपास के क्षेत्रों में फैली महामारी की बिना जांच कराये

सरकार हैज़ा निरोधक टीका देती जा रही है और वास्तविक बीमारी की जांच नहीं की गयी। टीका के नाम पर वह दवा सरकार अवाम के शरीर में घुसवा रही है जिसे "वर्ल्ड हेल्थ ऑरगनाईजेसन" वर्षों पहले रद्द करार दे चुकी है और वहीं दवाई सरकार दे रही है।

(सदन में विपक्ष की ओर से शेम-शेम की आवाज)

अध्यक्ष महोदय, यह क्रिमिनल नेग्लीजेन्सी का मामला है, यह आपराधिक उपेक्षा है, यह आपराधिक आरोप है। इसलिए मैं सरकार पर आरोप लगाता हूं कि वह जानबूझ कर पटना के लाखों-लाख लोगों के जीवन के साथ खिलवाड़ कर रही है। श्री वृषण पटेल साहब ने कहा था कि "हम जांच करवा रहे है।" मैंने सुझाव दिया था समस्या का निराकरण करने के लिए। वृषण पटेल साहब ने कहा "हम बीमारी की जांच कर रहे हैं।

अध्यक्ष महोदय, 25 जून को इस बीमारी की सूचना मिली। और 25 जून से आज तक सरकार यह निश्चित नहीं कर पायी कि यह बीमारी हैज़ा है या कोई दूसरी बीमारी है। सरकार हैजा का आउटडेटेड इंजेक्सन लगवा रही है जिसे वर्ल्ड हेल्थ ऑरगनाईजेसन ने रद्द करार कर दिया है। इसमें बिहार की जनता का क्या कसूर है, पटना नगर का क्या कसूर है कि आप उसे रद्दी दवा दे कर बीमार कर रहे हैं।

अध्यक्ष महोदय, सरकार कोई बंदोबस्त नहीं कर पा रही है। अगर बात पटने तक सीमित रहती तो एक बात थी। आज जिस तरह से पटना के लोग तरस रहे हैं, उसी तरह से

भागलपुर में 200 आदमी बीमार है। अखबार में समाचार निकला है, मुजफ्फरपुर में एक आदमी की मौत की ओर है। मसौढ़ी की यही शिकायत है, फुलवारी की यही शिकायत है और आरा को भी यही शिकायत है। भिन्न-भिन्न जगहों की यह शिकायत है। यह संक्रामक बिमारी सारे प्रदेश में फैल गयी है, इसलिए मुख्यमंत्री जी से निवेदन करना चाहता हूं कि थोड़ा गंभीर होइये, थोड़ा चिंतनशील होइये और अपने अंदर मनोभावना को जगाइये। आपमें भावना की शून्यता हो गयी है, आप में और प्रशासन में संवेदनशीलता का अभाव हो गया है। आज मानवता कराह रही है, तड़प रही है और आप उसका निकाकरण नहीं कर पा रहे हैं।

(शोरगुल)

अध्यक्ष महोदय, मैं पटना शहर में सफाई की व्यवस्था को देखने गया था। चंद जगहों पर हमने पाया दो, तीन व्यक्तियों को काम करते हुए, लेकिन कल जब बात उठी थी, तो सरकार की ओर से बताया गया था कि सैकड़ों-सैकड़ों लोग 50 रुपये की मजदूरी पर लगाये गये हैं। हो सकता है कि इन्होंने देखा हो, लेकिन मैं आज सबेरे 9.00 बजे के लगभग गया था तो कहीं भी एक दो आदमी से ज्यादा काम करते नहीं देखा। अभी तक वही गंदगी का अंबार कचड़े का अंबार बरकरार है। आपने भी कहा था कि 500 ट्रैक्टर मंगाने जा रहे हैं और सैकड़ों-सैकड़ों मजदूर को 50 रुपया के रोज पर सफाई के काम पर लगाने जा रहे हैं। लेकिन हमने जो देखा, उसे आधार पर हम यही कहना चाहते हैं कि किसी भी सरकार को पहले काम कराने की इच्छाशक्ति होनी चाहिए,

बिल पावर होना चाहिए, डिटरमिनेशन होना चाहिए। पटना जैसे शहर में 25 जून से आज तक लगातार यह बीमारी फैलती जा रही है, यह शर्मनाक है। आज बिहार का प्रशासन इतना निकम्मा है कि 25 दिन से यह स्थिति उत्पन्न है, लेकिन पटना की सफाई नहीं हो पाई हैं। बिहार में काम करने वालों का अभाव नहीं है, मजदूरों का अभाव नहीं है, आप पैसा खर्च करना चाहते है। लेकिन कही पर आपकी कमजोरी है, म्यूनिसिपल कॉरपोरेशन के जो चीफ एक्जीक्यूटिव ऑफिसर थे, वे कई दिनों तक गायब रहे, पता नहीं कहां चले गये थे यह सरकार का दोष है, निगम का दोष है पूर्व प्रशासक का दोष है कि सफाई कामों को वे नहीं करा सके। लेकिन अब दूसरे ने प्रभार ले लिया है तो स्थिति संभलनी चाहिए थी, पर स्थिति में कोई सुधार होता नहीं दीख रहा है। सारे प्रदेश की यही हालत हो रही है। संक्रामक बिमारी सारे प्रदेश में फैलती जा रही है, इसलिए हम आपसे निवेदन करते हैं कि आपने जो कार्रवाईयां की हैं, उसकी वास्तविकता को जानिए। आपने इसमें पहल करने की कोशिश की है आपने कहा कि निगरानी समिति का गठन किया गया है, आपने समन्वय करने की बात कही है मैं समाचार-पत्रों में जो कुछ निकला, उससे जानकारी मिली है कि आपने घोषणा की है कि कार्रवाई कर रहे हैं, लेकिन कार्रवाई हो नहीं पा रही है, सर जमीन पर। आपने फैसला लिया, निगरानी समिति के बारे में, तो या तो वह मौखिक है या वह कारगर नहीं है। आप उसको अमली जामा पहनाइये, उनको जिम्मेदारी दीजिये, इस बारे में कठोर एक्शन लीजिये, पूरे सदन का समर्थन आपके

साथ है। मानवीय जीवन के साथ खिलवाड़ करने की इजाजत किसी को नहीं दी जा सकती है, उसपर कठोर से कठोर कार्रवाई कीजिये, इस काम में पूरा सदन का समर्थन आपके साथ है। आपने जिनको प्रभार दिया है, उसको काम करने के लिए कहिये, चाहे वह सफाई का काम हो, टीका का काम हो, छिड़काव का काम हो, उसको ठीक से करिये। म्यूनिसिपल कॉरपोरेशन द्वारा जो पटना सीटी में ब्लीचिंग पाउडर भेजा गया, उकसे बारे में पता लगाइये और देखिये। कई जगहों में ब्लीचिंग पाउडर जो छिड़का गया वह भींगा हुआ था। कहीं-कहीं पर चूना का छिड़काव हुआ है। मैं कहना चाहता हूं कि आप जिस चीज का छिड़काव कीजिये वह असली चीज रहे यह मैं नहीं कहता कि यह आपके स्तर से हो रहा है, लेकिन प्रशासन के स्तर पर जो चिंता होनी चाहिए, वैसी स्थिति नहीं है, ऐसा क्यों है? इसलिए कि प्रशासन इस विषय को गंभीरता से नहीं ले रहा है। यहाँ आपका हल्कापन साबित हो रहा है वह सोचता है कि वह मुख्यमंत्री होता है, चलने वाला नहीं है। आज की सूचना के मुताबिक 96 लोग मारे गये हैं, अध्यक्ष जी पटना शहर में 96 लोगों की मौत कोई मामूली घटना नहीं है। यह प्रत्यक्ष रूप से सरकार की अकर्मण्यता की वजह से, निकम्मेपन की वजह से, कर्मचारियों की उपेक्षा की वजह से हुई है। जब कहीं पर दो, चार पांच आदमी किसी वजह से या पुलिस की गोली से मारे जाते हैं, तो सदन के भीतर और बाहर संसद में, लोक-सभा और राज्य-सभा में बातें उठायी जाती हैं, पटना

शहर में आज तक 96 आदमी मर गये हैं और यह स्थिति एक दिन की नहीं है, 25 जून से लगातार यह बीमारी जारी है, लेकिन सरकार टुकुर-टुकुर देख रही है और कुछ नहीं कर पा रही है। सरकार ने कहा कि हम कुछ नहीं कर सकते हैं। यदि आप कुछ नहीं कर सकते हैं तो आप भारत सरकार से, डब्लू०एच०ओ०से, कहीं से भी लोगों को बुलाइये और मदद लीजिये। सरकार के अधिकार की सीमा नहीं है, आपके पास बिल पावर होगा, इच्छा होगी, तो आपको मदद मिलेगी और जो देश के बड़े-बड़े स्वयंसेवी संस्थाएं है।, भोलेन्ट्री ऑरगनाइजेशन है। या इंडियन मेंडिकल एशोसिएशन है। उनकी पूरी मदद आपको मिलेगी। आप दरखास्त कीजिये, भारत सरकार के पास कि हमारे यहां स्थितिज गंभीर है, हम उसपर नियंत्रण नहीं कर पा रहे हैं, तो आपको उनकी मदद मिलेगी। आपको भारत सरकार और जो भी दूसरी-दूसरी सरकारें हैं उनसे पटना को बचाने के लिए मदद लेनी चाहिए। सरकारीसूत्र के अनुसार 43 आदमी मरें हैं और गैर सरकारी सूत्र के अनुसार 96, तो 43 मौत भी मामूली नहीं है। 488 आदमी अस्पताल में भर्ती हैं। हालत क्या है, रघुनाथ झा जी ने देखी कि नहीं देखी ?

श्री रघुनाथ झा : 488 नहीं, अब केवल 66 हैं।

डा० जगन्नाथ मिश्र : आज के अखबारों में है। सुप्रीटेंडेंट का बयान है। जिसमें कहा है। आपके कलक्टर ने कहा है, ढ़ाई लाख लोग बिमारी की चपेट में हैं। दो तारीख को वृषिण पटेल और स्वास्थ्य मंत्री जही ने कहा था कि उस दिन तक करीब एक लाख लोग बिमार थे।

श्री रघुनाथ झा : एक लाख लोग बिमार नहीं थे, जिस एरिया में बिमारी थी, उसकी जनसंख्या बतायी गयी थी।

डा० जगन्नाथ मिश्र : अध्यक्ष जी, मुख्यमंत्री ने कहा कि गलत समाचार छपा है। लेकिन सरकार से हमलोग खण्डन की अपेक्षा करते है। स्टेमैन जो देश का प्रख्यात दैनिक है, वह पटने का अखबार नहीं, राष्ट्रीय स्तर का अखबार है, जिसने 70 मौत की संपुष्टि की। 70 मौत की संपुष्टि उसने पहले दिन की और 90 मौत की संपुष्टि दूसरे दिन की। मुख्यमंत्री जी उसमें आपगपर भी टिप्पणी की गई है और स्वास्थ्य मंत्री पर भी टिप्पणी की गई है। आप उस अखबार को भी पढ़िये। एक औबजेक्टिव एसेसमेंट आपके कार्यकलाप के बारे में किया है और आपके प्रति चिन्ता व्यक्त की है कि बिहार के मुख्यमंत्री, स्वास्थ्य मंत्री और दूसरे लोग एकदम उदासीन हैं। उनको कोई चिन्ता नहीं है, पटना के हजारों-हजार लोग मारे जाय इसमें उनकी कोई चिन्ता नहीं है यह सरकार की कमजोरी है। अध्यक्ष जी पटना सिटी में जिला पदाधिकारी का आदेश हुआ कि मछली की बिक्री नहीं होगी। मैं आलोचना की दृष्टि से नहीं, बल्कि सही बात रखना चाहता हूं कि अध्यक्ष जी कि जिला पदाधिकारी का आदेश, आपका आदेश, लागू नहीं होगा, तो किसका आदेश लागू होगा। कलक्टर ने आदेश और दिया कि मछली की बिक्री नहीं होगी, लेकिन आज भी पटना सिटी में मछली की बिक्री हो रही है। यदि मछली की बिक्री होती रहेगी, तो बिमारी का निदान कैसे कर सकते है। स्वास्थ्यमंत्री जी,

सुनिये। आपके यहां सूइयां देने के काम में जो स्प्रीट प्रयोग किया जाता है, वह नहीं है। रुई में पानी भींगोकर सिरिंज पोछने का काम किया जा रहा है। आपके यहां सलाइन नहीं है, ग्लूकोज नहीं है। और यह बात किसने कही ? आपके पदाधिकारी ने कहीं।

आपके पदाधिकारी ने अखबारों में बयान दिया है।

श्री रघुनाथ झा : अध्यक्ष महोदय, माननीय नेता, विरोधी दल उस एरिया में गये थे। आज उनको अपनी बात यहां कहनी चाहिये कि वहां जाकर देखा तो क्या देखा। क्या वहां सिचुएशन है। यहाँ पोलिटिकल भाषण दे रहे हैं। इससे कोई लाभ मिलने वाला है?

डा० जगन्नाथ मिश्र : आज सदन में नहीं थे। हमने जो देखा वह भी कहा। जो यहां की परिस्थिति है वह भी कहा है और आज स्थिति देखकर ही सुझाव दे रहा हूं कि हमारा समर्थन सरकार की है। आप स्वयंसेवी संस्थाओं की मदद लीजिये, इंडियन मेडिकल इंस्टीच्युट की मदद लीजिये। बड़े पैमाने पर सफाई का अभियान चलाइये। बड़ी संख्या में मजदूरों की सफाई काये में लगाइये। जानकारी मिली है कि लोहानीपुर, मंदिरी, कदमकुँआ, मुसल्हपुरहाट, सब्जीबाग, सीताशरणलेन, गोरियामठ, हनुमाननगर, अशोकनगर, चिरैयाटाड़, चांदमारीरोड, पोस्टलपार्क, कंकड़बाग कोलनी, नया टोला आदि मुहल्लों में काफी गंदगी फैली हुयी है और बीमारी फैलने की आशंका है। कंकड़बाग और चिरैयाटांड़ में तो बीमारी फैल गयी है। मेरा सुझाव है कि आप पुराने स्थानों

पर जहां बीमारी फैल गयी है वहां सफाई कराकर, दवा का इंतजाम कर बीमारी पर नियंत्रण पाये और जहां बीमारी फैलने वाली है वहां रोकने का शीघ्र प्रबंध कीजिए। सरकार दवा की व्यवस्था करके, सफाई की व्यवस्था करके तथा स्वयंसेवी संस्थाओं और इंडियन मेडिकल एसोशियेशन की मदद लेकर इस बीमारी पर नियंत्रण पा सकती है। हमें जानकारी मिली है पटना मेडिकल कॉलेज में दवा का स्टॉक नहीं है।

श्री रघुनाथ झा : अध्यक्ष महोदय, मैं नेता विरोधी दल से आग्रह करूंगा कि इस डिबेट के बाद आप और हम तथा कुछ माननीय सदस्य मेरे साथ पी॰एम॰सी॰एच॰ चले और देख लें कि वहां दवा का स्टॉक है अथवा नहीं।

डा॰ जगन्नाथ मिश्र : अध्यक्ष महोदय, देखने में हर्ज क्या है ? तो मैं अध्यक्ष महोदय कह रहा था कि सरकार इन उपायों को करने की व्यवस्था करे।

श्री अनूपलाल यादव : अध्यक्ष महोदय, मेरा व्यवस्था का सवाल है। जो मूवर होते हैं वे 15 मिनट अधिक से अधिक बोलते हैं। नेता, विरोधी दल के आधा घंटा से ऊपर बोलते हुये हो गया। अन्य माननीय सदस्य तो अपनी बात सदन में रखना चाहते हैं। दो घंटे का डिबेट है। इस ओर में आपका ध्यान आकृष्ट करते हुये आपका नियमन चाहता हूं।

अध्यक्ष : मैं समझता हूं कि नेता, विरोधी दल अब अपनी बात समाप्त करेंगे।

श्री रमेन्द्र कुमार : अध्यक्ष महोदय, नियमावली में लिखा हुआ कि जो मूवर होंगे 15 मिनट बोलेंगे। आधा घंटा से नेता, विरोधी दल बोल रहे हैं।

(सदन में शोरगुल)

डा० जगन्नाथ मिश्र : जनता की बात हम लोग ही बोलने वाले हैं। आप सब की मिलीभगत है। चोर-चोर मौसेरे भाई हो गये हैं।

(शोरगुल)

श्री शिवनंदन झा : अध्यक्ष महोदय, नेता विरोधी दल ने शब्द "चोर-चोर मौसेरे भाई" कहा जो असंसदीय है इसे प्रोसिडींग से हटा देने का निदेश दिया जाय।

अध्यक्ष : शांति। यह अनपार्लियामेंटरी नहीं है। यह पुराना मुहावरा है।

श्री लालू प्रसाद : अध्यक्ष महोदय, सरकार को इस तथ्य को छिपाना नहीं है और न छिपाना चाहती है। इसलिये हमने कहा कि नेता विरोधी दल तथा अन्य माननीय सदस्य यह जो महामारी हुयी है, कैजुअलिटी हुयी है उसमें सबका सहयोग नियंत्रण के लिये होना चाहिये। जो भी मौत हुयी आगे नहीं हो इसके लिये सरकार प्रयत्नशील है। लेकिन नेता, विरोधी दल पोलिटिकल लाभ लेने के लिये उतावले हो रहे हैं। अध्यक्ष महोदय, दिहात में एक कहावत है ......

(शोरगुल)

अध्यक्ष महोदय, सारे मामलों के लिए मंत्री पर जो आरोप लगाया है उसके जवाब में हम बतायेंगे कि इसके लिये कौन पार्टी का यूनियन जिम्मेवार है। दिहात में एक कहावत है-माल महाराज का, मिर्जा खेले होली।" यहां लोग मर रहे हैं और ये होली खेल रहे हैं।

(शोरगुल)

डा० जगन्नाथ मिश्र : अध्यक्ष जी, पूरे सिरियसनेस के साथ, मानवता की मदद के लिये, हम पटनावासियों की जान की सुरक्षा के लिये सरकार का सहयोग करना चाहते हैं।

अध्यक्ष जी, 6-7-90 के "टाइम्स ऑफ इंडिया" में एक लेडी डाक्टर ने जो इंटरव्यू दिया है वह इन्भरटेड कौमा में है उसको मैं आपकी अनुमति से पढ़ देता हूं :

"We are fighting against heavy odds," said a female doctor at the Indira Gandhi central casualty ward.

तो अध्यक्ष जी, विपक्ष ही हैसियत से मैं नहीं कह रहा हूं। अधिकारी द्वारा जो परेशानी व्यक्त की यगी है वह पब्लिकली जो कह रहा है, छिपा नहीं रहा है उसपर ध्यान दिलाता हूं।

अध्यक्ष जी, इसी प्रकार अन्य जगहों में जैसे मसौढ़ी, मोकामा, गौरीचक आदि जगहों में भी बीमारी फैली हुई है। इसके अलावे अन्य जिलों में भी महामारी का प्रकोप है जैसे भागलपुर, मुजफ्फरपुर, रक्सौल, समस्तीपुर और पटना के सीमावर्ती जिला हाजीपुर तथा आरा में भी महामारी फैल चुकी हैं इसलिये इन जिलों के लोगों की तरफ भी सरकार का ध्यान जाना चाहिये। इनको मदद की आवश्यकता है। इसमें हमारा सहयोग आपको रहेगा। लेकिन प्रशासन आपका नहीं सुन रहा है। आप राज़नीतिक इच्छा बनाइये। अपने को प्रभावकारी बनाइये, इसमें हमारी मदद मिलेगी। आप अगर

जनता की सेवा के लिये काम नहीं कीजिएगा तो बिहार की जनता की हिफाजत का काम हम करेंगे।

(शोरगुल)

श्री विनायक प्रसाद यादव : अध्यक्ष महोदय, इसमें कोई दो राय नहीं है कि बीमारी ने संक्रामक रूप ले लिया है, लेकिन मैं माननीय विरोधी दल के नेता से पूछना चाहता हूं कि क्या तीन दिन पहले जो स्थिति थी पटनासिटी में, आज भी वही है ? जहां बीमारी फैली है वहां नगर विकास मंत्री और स्वास्थ्य मंत्री, दोनों ने पटनासिटी में जाकर काफी मुस्तैदी से काम शुरू कर दिया है, बीमारी रोकने के लिये।

अध्यक्ष महोदय, मैं आपके जरिये कहना चाहता हूं कि यह संक्रामक बीमारी है और संक्रामक बीमारी आज से नहीं है। छः महीना पहले इसी पटना शहर में मुझे जौन्डीस की बीमारी हो गयी थी। डा० सी० के० नारायण साहब मुझे देखने के लिए आये, उन्होंने दवा दी तो जौन्डीस क्योर होना शुरू हो गया। उन्होंने कहा कि पटना में तीन हजार आदमी अभी सफर कर रहे हैं जौन्डीस से उन्होंने यह भी कहा कि पिछले कई सालों से पटना में एक हजार आदमी मरे है।, जौन्डीस से। उन्होंने कहा कि पटने में पानी के जो नाले बने है। वे काफी जर्जर हो चुके हैं। अध्यक्ष महोदय, उसमें कीड़े रहते हैं, पीने का जो पानी है उसमें भी कीड़े आते हैं, मिट्टी तक आती है।

डा० शकील अहमद : दूषित पानी से जौन्डीस नहीं होता है या वायरस डिजीज होता है।

श्री विनायक प्रसाद यादव : जो संक्रामक बीमारी फैली है वह पटना से बाहर भी फैल रही है, लेकिन सरकार मुस्तैदी से उसका मुकाबला कर रही है। बाहर से मजदूर आयें हैं, डा० बुलाये गये हैं और पटनासिटी की स्थिति में सुधार हुआ है।

अध्यक्ष महोदय, हम कहना चाहते हैं कि माननीय विरोधी दल के नेता ने कहा कि दो तारीख को स्वास्थ्य मंत्री और नगर विकास मंत्री पटनासिटी गये थे लेकिन जगन्नाथ जी को आज जाने की फुरसत मिली। डा० लोहिया और जयप्रकाश नारायण कहा करते थे कि देश का निर्माण तब होगा जब लोग अपना काम आप करेंगे लोगों को स्वच्छ रहने की आदत डालनी होगी। अध्यक्ष महोदय, सरकार को एपीडेमिक ऐक्ट लागू करना चाहिए। यह ऐक्ट 1891 में जब प्लेग महामारी शुरू हुई थी तो अंग्रेजों ने लागू किया था। ऐक्ट को लागू करके जो बीमारी फैली थी उस पर अंकुश लगाया गया था। हम सरकार से कहना चाहते है। कि सरकार को पटना में जितनी गंदगी जम गई है, कांग्रेसी हुकूमत ने जो गंदगी जमा कर दी है, इसको खत्म कराया जाये। बीमारी एक दिन की नहीं हे, यह उन्हीं की बनायी हुई है। पटने में जितने पानी के नल हैं, उन नलों को बदल देना चाहिए। तब ही पटना में बीमारी खत्म हो सकेगी। अध्यक्ष महोदय, अभी विधान-सभा सत्र में है।। मुख्यमंत्री महोदय को ऐलान करना चाहिए कि हम सभी लोगों झाडू उठाकर पटना को साफ करेंगे। एक उदाहरण आप बनाईये। सभी को ऐसा करना चाहिए जब हम खुद सफाई का काम शुरू करेंगे, तो नागरिकों

को जो व्यवहार गड़बड़ हो गया है उसमें सुधार हो सकेगा, उस पर अंकुश लगाया जा सकेगा। जैसे दो-तीन रोज में हुआ है वहां सरकार बड़ी मुस्तैद है और हमको अंदाजा है कि इसी मुस्तैदी से काम किया गया तो बीमारी समाप्त हो सकेगी, लोगों की हालत में सुधार आ सकेगी।

श्री सुशील कुमार मोदी : अध्यक्ष महोदय, मैं सरकार के सामने कुछ सवाल रखना चाहता हूं।

अध्यक्ष महोदय, 15 दिनों के अन्दर 94 लोगों की मौत होने के पश्चात् बिहार विधान सभा इस विषय पर विचार करने के लिये एकत्र हुई है। आज सारा पटना बन्द था इस विषय को लेकर। मैं जो प्रश्न सरकार से पूछना चाहता हूं उसका उत्तर यदि सम्भव हो तो वे दे दें।

सबसे पहली बात यह कहना चाहूंगा कि नगर निगम में दो बार हड़ताल हुई। हमारे मुख्यमंत्री कहते हैं कि कुछ दल का हाथ है। पहली बार हड़ताल हुई और जो मांगें मानी गयीं, दुबारा हड़ताल करने की आवश्यकता क्यों पड़ी ? क्या यह सच नहीं है कि जो मांगें मानी गयी थीं, वह कार्यान्वित नहीं रायी जा सकीं, और दुबारा हड़ताल करना पड़ा ?

दूसरी बात यह है कि नगर निगम ममें दो-दो प्रशासक काम कर रहे थे। जब फुल सिंह छुट्टी पर चले गये तो यू० सिन्हा को चार्ज दिया गया और यू०के० सिन्हा चैम्बर में बैठे थे, फूल सिंह आये तो वे नहीं जा सके। जब उनसे पूछा गया कि प्रशासक कौन है तो उन्होंने खुद कहा कि मुझे खुद पता नहीं है कि प्रशासक कौन है और नगर निगम के कर्मचारी किससे आदेश लें।

मुख्यमंत्री जी इस बात को स्वीकार करते है। कि लालदेव सिंह के जमाने में 300 फर्जी नाम से बहाली हुई, पटेल साहब मेरे साथ में थे, रजिस्टर में फर्जी नाम दर्ज हैं, सफाई कर्मचारीं के नाम पर तो मैं पूछता हूं कि फर्जी नामों को हटाने के लिये सरकार ने क्या कार्रवाई की है ? उन अधिकारियों पर क्या कार्रवाई की गयी है जिन्होंने ऐसा काम किया और उन कर्मचारियों पदाधिकारियों पर कौन सी कार्रवाई की गयी है जिन्होंने सफाई का काम नहीं किया ?

अध्यक्ष महोदय, 15 दिन तक यह सवाल चलता रहा और यह भी निर्णय नहीं किया जा सकता कि मौत हैजा से हुई या गैस्ट्रोइंटाईटिस से। 25 तारीख को समाचार-पत्रों में निकला कि हैजा से मौत हुई है, यदि सरकार जांच करना चाहती तो तीन दिनों के अन्दर कल्चर होता है, इस निष्कर्ष पर पहुंचा जा सकता था कि मौत का कारण हैजा है अन्य कोई बीमारी। कौन जिम्मेवार है इसके लिये ? यह प्रशासन की लापरवाही है, इस बात का निर्णय करना चाहिये था। प्रशासन ने कहा था कि बाहर से सफाई मजदूर मंगाये जायेंगे। मैंने मंत्री महोदय को लिखा था कि पटना नगर निगम के कर्मचारी सफाई करने में सक्षम नहीं है, लेकिन सरकार को यह फैसला करने में 15 दिन क्यों लग गया, यदि बाहर से मंगाना ही था तो दूसरे तीसरे दिन इसका फैसला क्यों नहीं किया गया ?

मेरा अगला सवाल है कि जो सुई लगायी गयी है, हैजा निरोधक लोगों को, उसमें फंगस लगा हुआ था। मैंने वह सुई

सरकार के सामने उपस्थित की तो उस पर क्या कार्रवाई की गयी ? नवभारत टाईम्स के प्रथम पृष्ठ पर फोटो छपा है कि हैजा निरोधक सुई से फफुंदी निकल गयी है, सुई ने इसको बढ़ाने का काम किया, इसके लिये सरकार क्या कार्रवाई करना चाहती है ?

अध्यक्ष महोदय, सरकार बार-बार घोषणा कर रही है कि जल जमाव को साफ किया जा रहा है। मैं सरकार को सूचना देना चाहता हूं कि आज तक पटना के अन्दर, सफाई का काम जरूर चल रहा होगा, लेकिन अभी 6.00 बजे अपराह्न तक एक भी वार्ड जहाँ जल-जमाव है उसको साफ करने का काम नहीं किया गया है।

अध्यक्ष महोदय, मैं मुख्यमंत्री से कहना चाहता हूं कि मुख्यमंत्री जी हर तरफ के दौरे पर हफ्ते में जाते है। और जब मुख्यमंत्री पटना के अन्दर हैं, पटना में है और पटनासिटी में हैजा से या गैस्ट्रोइन्ट्राइटिस से बहुत से लोग मर गये तो क्या मुख्यमंत्री पटना सिटी के दौरा पर नहीं जा सकते हैं। इसलिये मैं कहता हूं कि मुख्यमंत्री पटना सिटी का दौरा करें और अपनी आंखों से देखें कि वहां क्या हाल है ?

अध्यक्ष महोदय, भारतीय जनता पार्टी ने बन्द की अपील की थी, बन्द का एलान किया था और यह जनतांत्रिक मूल्यों का तकाजा है तो क्या मुख्यमंत्री हम पटना के लोगों को बुलकार सुझाव नहीं ले सकते हैं जब कि हम सरकार के समर्थन में हैं। जब हम इस सरकार के समर्थक हैं तो क्या यह सरकार मुझसे सुझाव भी नहीं ले सकती थी ?

अध्यक्ष महोदय, आप जानते हैं कि जो लोग गोलियों से मारे गये उनको यह सरकार 50 हजार रुपया तक मुआवजा दे सकती है तो ये मासूम बच्चों ने कौन सा अपराध किया था, कौन सी गलती की थी कि अभी तक सरकार ने उनकी मौतों का एलान नहीं किया है ? इसीलिये मैं कहना चाहता हूं कि यह सरकार उन मासूम बच्चों की मौत का एलान करें और उन्हें उचित मुआवजा दे।

अध्यक्ष महोदय, जब श्री राजीव गांधी, प्रधानमंत्री थे तो दिल्ली के अन्दर यही बीमारी गैस्ट्रोइनट्राइसिस फैली और उससे बहुत लोग मारे गये और उस कांग्रेस की सरकार ने उस बीमारी को रोक नहीं पायी।

(इस अवसर पर काफी शोरगुल)

अध्यक्ष महोदय, नगर निगम और स्वास्थ्य विभाग इसे रोकने में पूरी तरह अक्षम है इसलिये माननीय मुख्यमंत्री उनपर आवश्यक कारवाई करें।

अध्यक्ष महोदय, अंत में मैं चार सुझाव देना चाहता हूं। सबसे पहला सुझाव मेरा है कि पटना के विकास के लिये पटना के अन्दर कई एजेंसियां हैं जैसे पटना इम्प्रुमेंट ट्रस्ट, विश्वास बोर्ड, पी० डब्लू० डी० और नगर निगम, इन सबको मिलाकर दिल्ली की तरह पटना के विकास के लिये एक एजेंसी बनाई जाय तो पटना का बहुमुखी विकास करें।

(2) दूसरा सुझाव है कि वर्ल्ड बैंक और विश्व बैंक पटना की जलापूर्ति के लिये 7 करोड़ रुपये की योजना बनाया

है लेकिन संचिका नगर विकास विभाग में वर्षों से पड़ी हुई हैं, सड़ रही है इसलिये इस पर शीघ्र सरकार निर्णय करें।

(इस अवसर पर काफी शोरगुल)

अध्यक्ष महोदय, विश्व बैंक 40 करोड़ रुपया देने के लिये तैयार है लेकिन राज्य सरकार को अपना शेयर मात्र 20 करोड़ रुपया 5 वर्षों में देना होगा। इसलिये मैं चाहूंगा कि राज्य सरकार अपना शेयर बेचकर पटना, रांची और धनबाद, इन तीन शहरों के लिये जलापूर्ति की व्यवस्था को कार्यान्वित कराये।

3) मेरा तीसरा सुझाव है कि ड्रेनेज सिस्टम का विकास करे

4) विद्युत उत्पादन के लिये मैं कहना चाहता हूं कि पटना के लिये एक विद्युत उत्पादन केन्द्र की स्थापना की जाय।

अंत में मैं कहना चाहता हूं कि पटना की सड़कों को विश्वास बोर्ड ने जिस तरह बेकार कर दिया है कि लोगों का चलना मुश्किल हो गया है। अध्यक्ष महोदय, पटना की सड़कों को सरकार ठीक करा दे ताकि लोगों को दिक्कत नहीं हो। अध्यक्ष माहेदय, सरकार की नीयत पर मुझे संदेह नहीं है और सरकार ने पूरा प्रयास किया है लेकिन सरकार के पूरे प्रयास करने के बावजूद भी हैजे से या गैस्ट्रोइनट्राटिस से लोगों की मौतें हुई है। इसलिये में चाहूंगा कि सरकार कड़ा से कड़ा कदम उठाये और उसमें बी०जे०पी० लोग पूरा सहयोग, समर्थन देने के लिये तैयार हैं और आज पटना बंद के दौरान

जिन पुलिस अधिकारियों ने लाठी चार्ज किया है, जिसमें अनेक व्यक्ति घायल हुए हैं, मैं चाहूंगा, उन अधिकारियों को मुअत्तल किया जाय और साथ ही "पटना बंद" सरकार के लिये चुनौती है और जनता में कितना आक्रोश है, इसका प्रतीक है। इन्हीं शब्दों के साथ में अपना भाषण समाप्त करता हूं।

श्री अवध बिहारी सिंह : अध्यक्ष महोदय, व्यवस्था का प्रश्न है। पटना सिटी के इलाके में नालों पर बहुत सी दुकानें बना लिये जाने से पानी फैल जाता है और गंदगी फैल जाती है, क्या सरकार उन दुकानों को हटाना चाहती है, मैं जानना चाहता हूं। इससे संक्रामक रोग हो रहे हैं।

श्री रामजतन सिन्हा : अध्यक्ष महोदय, अभी माननीय सदस्य मोदी जी ने जो भाषण दिया, वह विजनस परपस है ये दुकान वाले हैं, इसलिये यह स्पष्ट है कि उनके ऊपर छापा पड़ने वाला है।

श्री लालू प्रसाद : श्री सुशील कुमार मोदी और श्री रामजतन सिन्हा तथा मैं एक ही यूनियन के पुराने सदस्य है, इसलिये ऐसा कुछ सरकार नहीं करना चाहती है।

श्री रामनाथ यादव : अध्यक्ष महोदय, पटना के अंदर जो महामारी से 94 लोगों की मृत्यु हुई है, जिस पर माननीय सदस्यों ने चिन्ता व्यक्त की है, यह पटना के लिये कोई नई बात हनीं है। पटना शहर में आबादी काफी तेजी से बढ़ रही है और जितने नाले या पुराने सड़क हैं, वे सब जीर्ण-शीर्ण अवस्था में जा चुके हैं। सफाई की व्यवस्था के लिये जितने

कर्मचारी बहाल किये गये हैं वे सफेदपोशों के बाल बच्चे रखे गये हैं। जो शुरू से ही उस काम में लगे हुए थे, उन सफाई मजदूरों को हटा दिया गया, नालों की सफाई वे नहीं कर सकते हैं। ऐसे लोग कैसे नालों की सफाई कर सकते हैं? आपको ऐसे लोगों को हटाने की बात करनी चाहिये और जो गांव के मजदूर हैं, जो सफाई के काम में लगे हुए थे उनको लगाया जाता तो यह कभी नहीं होता। आप यह भी जानते हैं कि कितने पुराने नाले थे और वे भर गये, जिससे पानी की निकासी बंद हो गयी। यदि इन पुराने नालों की सफाई नहीं की गयी तो अभी क्या, बाद में भी इससे भी भयानक रोग फैल सकता है। पुराने नालों की सफाई करवायी जाय। पुराने समय में तालाब थे पानी फैलने के बाद एक गड्ढा खुदा हुआ रहता था, उसमें पानी जमा हो जाता था। लेकिन आज सभी गड्ढे भर गये हैं। नतीजा है कि नाले निकाले नहीं गये भर गये और नालों में पानी गिराया नहीं जाता, सारा पानी सड़कों पर फैल जाता है। अतः इसकी व्यवस्था होनी चाहिये।

श्री रामजतन सिन्हा : अध्यक्ष महोदय, मेरा प्वाइंट ऑफ ऑर्डर है। मेरा व्यवस्था का प्रश्न यह है कि कल मुख्यमंत्री जी ने कहा कि लालदेव सिंह के टाइम में ऐसे तीन सौ लोगों की बहाली हुई, जो कि सफाई का काम नहीं कर सकते थे। इनको पता नहीं होगा कि सब के सब गोरियाटोली के हैं।

अध्यक्ष : यह कोई व्यवस्था का प्रश्न नहीं है।

श्री रामनाथ यादव : अध्यक्ष महोदय, इसी तरह से हम पटना के सौंदर्यीकरण का नाम ले रहे हैं। इस पर करोड़ों

रुपये खर्च करने की बात है। हम करोड़ों रुपये खर्च करने जा रहे हैं, वह ठीक जगह पर जायेगा, बीच के लोग इस पैसे को खा जाते हैं, पैसा बर्बाद हो जाता है और हमेशा से होता रहा है, नतीजा हो रहा है कि जितना विकास होना चाहिये था, वह नहीं हो रहा है। जितने रोड हैं, नाले हैं, कागजों पर बने हैं, पानी की निकासी बंद है और इसी तरह से सिटी में हैजे का प्रकोप हुआ है। सरकार ने रोकथाम की, जिसके चलते यह बीमारी कम हुई। पुरानी सरकार ने जो भी काम किया है चाहे नाले का हो या किसी भी तरह का, वह सब वैसे ही है। नालों पर दुकानें बन गयी हैं, फल यह है कि वह उसको हटा नहीं सके हैं, जिससे नाले के पानी के निकास की व्यवस्था हो सके। इसलिये हम लोगों को सारी बातों को चेक करना चाहिये। बड़ी-बड़ी बिल्डिंगें नालों के लियें परखी गयी जमीन पर बनी हुई हैं, छप्परें डाल दी गयी हैं। कोई बात होती है तो झोपड़े तुरत हटा देते हैं, जो बिल्डिंगें बन गयी हैं, उनको नहीं हटाते। नालों को पाट दिया गया है और सरकार ने जो हैजे की रोकथाम के लिये कदम उठाये हैं, जो सफाई कार्य में मजदूर लगाये हैं, वे अभी भी काफी नहीं हैं और अभी भी काफी गंदगी सड़कों पर है। इसलिये सरकार को नालों की व्यवस्था, सफाई की व्यवस्था, ब्लीचिंग पावडर आदि की व्यवस्था को तेजी से करना चाहिये ताकि जनता को राहतत मिल सके। इन्हीं शब्दों के साथ मैं अपना भाषण समाप्त करता हूं।

अध्यक्ष : श्री महेन्द्र प्रसाद सिंह।

श्री महेन्द्र प्रसाद सिंह : अध्यक्ष महोदय, इस महामारी को लेकर जो सदन में आज विचार-विमर्श हो रहा है और इस महामारी की गंभीरता और व्यापकता के संदर्भ में प्रतिपक्ष के नेता ने भी जो बातें कहीं, उसी संदर्भ में इस सदन के नेता ने कहा कि इस महामारी को लेकर वे लोग राजनीति कर रहे हैं। हम आपके माध्यम से यह बात कहना चाहते हैं कि इस बीमारी को लेकर बजाय बचाव के राजनीति करने से अगर सदन के नेता को चिंता है, तो खुशी है। इन सवालों पर आज उन्हें विचार करना चाहिये। उन्होंने कहा कि मौतें हैजे से नहीं किसी और बीमारी से हुई हैं। हम कहते हैं कि यह नहीं देखना चाहिये कि बीमारी किस तरह की थी और किस बीमारी से मौतें हुई, बल्कि यह देखना चाहिये कि मौतें हुई हैं। लेकिन ग्रामीण विकास मंत्री और कल सदन के नेता ने भी वक्तव्य दिया कि हैजे से इतने लोग नहीं मरे। अगर आप इसको ही राजनीति कहते हैं तो यही है राजनीति करना। तकनीकी शब्दों के जाल में सब को उलझाना, यही राजनीतिवाद है। दूसरे सारे सदस्य कोई चिकित्सा विशेषज्ञ नहीं है।। लोगों ने अखबारों में जो पढ़ा हैजे से लोग मरे, जो देखा, उससे सदन को अवगत कराया। उनके मन में यह बात नहीं थी कि किस बीमारी से मरे और किस बीमारी से नहीं मरे। सदन की समिति इस बात की जांच करे। सरकार इस बात पर स्पष्ट है कि लोग किसी अन्य बीमारी से मरे, तो सरकार के लिये और भी शर्मनाक बात है कि वह मरने वालों के परिवार के लोगों को इतनी देर बाद बता सकी कि लोग किस बीमारी से मरे या मर रहे हैं। जहां तक सरकारी साधनों की बात है, इन्होंने घोषणा की कि पांच सौ टैक्टर सफाई में लगे हुए हैं, सदन

के सारे सदस्य इस बात से अवगत हैं कि हैजे का सबसे ज्यादा प्रकोप पटना सिटी में है। सबसे ज्यादा पटना सिटी आक्रांत है और उसके आस पास के लोग सबसे ज्यादा इस बीमारी से प्रभावित हैं। पटना सिटी में सरकार ने जो नियंत्रण कक्ष बनाया है उसके प्रभारी ए०डी०एम० ने हम लोगों को बताया कि कुल जमा वहां पर 19 टैक्टर है और 19 ट्रैंक्टरों में से भी मात्र 13 ट्रैक्टर परिसर में मौजूद थे। हमने पूछा कि ये ट्रेक्टर क्यों नहीं काम पर लगे हुए हैं, गंदगी पूरे शहर के आसपास के इलाकों में फैली पटना सिटी अस्पताल में हुई है, तो उन्होंने कहा कि अभी फिलहाल उनके पास मजदूर नहीं है तारीख से हैं, जिसमें वे काम करा पाने की स्थिति में नहीं हैं। मैं सरकार से कहना चाहता हूं कि एक तरफ सरकार सदन में घोषणा कर रही है कि लोगों को पचास रुपये देकर भी रखा जायेगा, दूसरी तरफ सरकार और सदन के सारे लोग जानते हैं कि बिहार बेरोजगारी की कगार पर खड़ा है, ऐसे राज्य में पचास रुपये रोज की मजदूरी में लोग नहीं मिलते हैं, यह बड़ा विरोधाभास लगता है, उनके वक्तव्य, उनकी स्पीच में। दूसरी बात मैं यह कहना चाहता हूं कि इस बुरी बीमारी से प्रभावित लोगों की संख्या बहुत बड़ी तादाद में है। इससे कोई लोग इन्कार नहीं कर सकते लेकिन सरकारी साधनों की क्या स्थिति है? पटना सिटी अस्पताल में 2 तारीख से 9 तारीख तक कुल भर्ती होने वाले रोगियों की संख्या इस प्रकार है : 2-3 तारीख को 15, 3-4 तारीख को 12, 4-5 तारीख को 9, 5-6 तारीख को 10, 6-7 तारीख

को 19, 7-8 तारीख को 18 और 8-9 तारीख को 18। मैं यह तथ्य इसलिए पेश कर रहा हूं कि एक तरफ बीमारी लगातार बड़े पैमाने पर आबादी को ग्रसित करता चला जा रहा है। दूसरी तरफ अस्पताल में रोगियों के भर्ती होने की संख्या कम है, वह इस चीज को सामने लाती है कि लोगों को अस्पताल ले जाने के लिए सरकारी साधन की व्यवस्था नहीं है। यह इस बात को प्रमाणित करता है। चौथी बात मैं कहना चाहता हूं कि सरकार ने सफाई के सवाल पर सरकार ने बड़े जोरों से लोगों के सामने अपना पक्ष पेश किया है। माननीय सदस्य जो इस सदन के हैं, इनमें से ज्यादातर आर० ब्लॉक, एम०एल०ए० फलैट्स या एम०एल०ए० क्लब में रहने वाले हैं, वहाँ सफाई की जो व्यवस्था है, उसी से आप अन्दाज लगा सकते हैं कि पटना के अन्य जगहों में सफाई की क्या व्यवस्था है। इसी से आप अन्दाजा लगा सकते हैं। अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से कहना चाहता हूं कि वैसे तो इतनी गम्भीर बीमारी को लेकर यहां चर्चा 29 तारीख से ही शुरू हुई है, 29 तारीख को ही मैंने एक कार्यस्थगन प्रस्ताव पेश किया था लेकिन उसे स्वीकार नहीं किया गया, इसको कोई नोटिश नहीं दिया गया लेकिन मैंने पांच मरने वाले लोगों की सूची इसी सदन में दी थी। पुनः 2 तारीख को इसी सवाल को उठाया गया और उसी सवाल पर सरकार बहस कर रही है आज 10 तारीख को। अध्यक्ष महोदय, जो सरकार नया बिहार बनाने के सवाल पर बहुत दृढ़ नजर आ रही है, बहुत दृढ़ भाषा का इस्तेमाल करती है, तो मैं पूछना

चाहता हूं कि क्या वह नया बिहार दिशाहीन अवस्था में बनाना चाहती है। जिस राज्य में अध्यक्ष महोदय, हैजा जैसे रोगों से लोगों की रक्षा नहीं कर सकती है, वह कैसे लोगों को दृढ़ और विश्वसनीय सरकार दे सकेगी ? यह एक महत्वपूर्ण विषय है। यह ऐसा नहीं कि मुझे इस सरकार से कोई एलर्जी है, कोई घृणा भी नहीं है। मैं बताना चाहता हूं कि हैजा, मलेरिया आज कोई ऐसा रोग नहीं है जिसके कारण लोग मर सकते हैं लेकिन ऐसे साधारण रोगों से भी लोग मर रहे हैं तो वह इस तथ्य को प्रमाणित करता है कि सरकार साधारण रोग से लोगों की जिन्दगी की हिफाजत करने में सक्षम नहीं है। आज भी अखबारों में जो सूचनाएं आई हैं, पटना सिटी में एक बच्चे की मौत हुई है इस बीमारी से और सफाई की जो अव्यवस्था है, उसका मूल कारण है मल और मूत्र का नाला पानी के नाले के समानान्तर होना। यह नाला बहुत ही पुराना है और पाइप भी पुराने हो गये हैं। इसके कारण इन दोनों का जल एक दूसरे में मिल जाता है जो बीमारी के लिए आधारभूत भूमिका प्रदान करती है। यदि सरकार इन सवालों पर गम्भीर है तो उनको इन बुनियादी सवालों को भी हल करने के बारे में योजना पेश करनी चाहिए। जहां तक सफाई का सवाल है पिछले सत्र में भी माननीय सदस्य ने इस सवाल को रखा था कि विभिन्न मुहल्लों में, विभिन्न सड़कों पर जो गढ़े खोदे गए, उसे नहीं भरा गया जो पटना शहर में गंदगी को बढ़ाने में मदद किया। सरकार ने इस योजना को ऐसे समय में चलाई है जिससे पटना सिटी और पटना साहब में जल जमाव हो रहा है

जिससे पूरा नगर परेशानी की स्थिति में है। अंत में मैं सरकार से कहना चाहता हूं कि सचमुच में अगर सरकार उन परिवारों के प्रति जो इस बीमारी के कारण परिवार के सदस्यों के साथ नहीं रहे, उनसे अलग हो गए हैं ऐसे लोगों के प्रति सरकार अगर सहानुभूति रखती है तो ऐसे लोगों को मुआवजा देने के सवाल पर सरकार को गम्भीरता से विचार करनी चाहिए और इसके जरिए मृतक परिवारों के प्रति अपनी निष्ठा का एहसास कराएं।

श्री रघुनाथ झा : अध्यक्ष महोदय, अभी सदन में बहुत ही महत्वपूर्ण विषय पर चर्चा हो रही है और मौत चाहे एक व्यक्ति का हो चाहे सौ व्यक्ति का हो, किसी समाज के लिए या सरकार के लिए यह चिन्ता का विषय है। लेकिन मुझे अफसोस है नेता, विरोधी दल के भाषण को सुनकर हम समझते थे कि नेता विरोधी दल अपने भाषण में सरकार को कुछ सुझाव देंगे, नसीहत देंगे और कैसे इस रोग से, महामारी से निपटा जाए, इस पर वे विचार-विमर्श करेंगे। लेकिन अफसोस इस बात से है कि हुजूर, देहात में एक कहावत है-"चलनी हंसलन सूप पर जिनका अपने बहत्तर ठो छेद"। हमको अफसोस है कि हमलोगों को विरासत में क्या मिला। यह गन्दगी, महामारी, भ्रष्टाचार बीमारी, शोषण और दोहन और आज हमें सारी स्थितियों का सामना करना पड़ रहा है। जो कुकर्म पिछले दिनों हुई है, उन सारे कुकर्मो का जवाब आज हमलोगों को देना पड़ रहा है। बीमारी का कारण हम ऐसा नहीं मानते लेकिन गन्दगी, जिस बात का जिक्र हमारे माननीय सदस्य श्री विनायक प्रसाद यादव ने किया है कि

नाला तीन महीने में ही खराब हो गया और नाली का पानी और सिवरेज दोनों मिल गया है ....

डा० जगन्नाथ मिश्र : आपने सफाई के लिए मजूदरों को क्यों नहीं बहाल किया ?

श्री रघुनाथ झा : अध्यक्ष महोदय, 2700 मजदूर अभी हमारे पी०एम०सी०एच० यानी पूरे पटना सिटी के इलाके में गन्दगी की सफाई में लगा हुआ है प्रति दिन के हिसाब से और अध्यक्ष महोदय, जैसा कि माननीय सदस्य रामनाथ यादव जी ने कहा कि पटना शहर में जो सफ़ाई के लिए नियुक्ति की गई है, स्वीपर की जगह बड़े लोगों की नियुक्ति की गई है,, जिससे पटना शहर का नारकीय जीवन हो गया है। अध्यक्ष महोदय, जब मुख्यमंत्री के नोटिश में यह बात आई, सरकार के नोटिश में यह बात आई कि तीन सौ से अधिक लोग स्वीपर की जगह बड़े जात के लोग बहाल कर लिए गए हैं, तो मुख्यमंत्री ने कहा कि ये सब बड़े लोग हैं, उनको एक जगह जमा कीजिए और उनको झाड़, टोकड़ी और फावड़ा दीजिए और जहां-जहां पटना में गन्दगी है, उसकी सफाई कराईए ....

अध्यक्ष महोदय, सफाई का काम हो रहा था, लेकिन बाधा डाला गया। जरा जुर्रत तो देखिये, हमारे एडमिनिस्ट्रेटिव अफसर जो सफाई का काम करा रहे थे, उनको लोगों ने घेर लिया और सफाई के कार्यों को बन्द करा दिया। अध्यक्ष महोदय, नेता विरोधी दल और विरोधी पक्ष के माननीय सदस्य आश्वस्त करे तो मैं कहना चाहूंगा कि जो सब लोग स्वीपर का काम कर रहे हैं, उन हजारों लोगों को ....

(जोरों का शोरगुल)

इस तरह हरकत का काम वे कर रहे थे और दूसरी ओर ये घड़ियाली आंसू बहा रहे हैं कि रोगियों का उपचार नहीं हो रहा, तो सफाई नहीं हो रही है पटना बन्द के नाम पर कारपोरेशन की गाड़ी को ट्रक्टर के चक्के को पंचर किया गया। लोगों को दवा बांटने, दवा छिड़काव करने के काम में बाधा डाला गया। झाड़ू नहीं देने दिया गया।

(जोरों का शोरगुल)

डा० जगन्नाथ मिश्र : अध्यक्ष महोदय, रघुनाथ जी कह रहे थे कि सफाई करनेवाले, दवा के छिड़काव करनेवाले और रोगियों के उपचार करने वाले को बाधा पहुंचाया गया, तो मैं कहना चाहूंगा कि उनकी पहचान करनी चाहिये थी और नाम बताना चाहिये था कि आखिर वे कौन आदमी थे ?

(जोरो का शोरगुल)

श्री रघुनाथ झा : अध्यक्ष महोदय, वे थे लोकल बोर्ड के चेयरमैन श्री पाण्डेय और उनके साथी श्री ललितेश्वर झा, जो ट्रेड यूनियन के हैं। ये पटना बन्द के नाम पर ये सब हरकत कर रहे थे। उनलोगों ने बाधा डाला और रोगियों के उपचार और सफाई के काम में बाधा पहुंचाया।

जहां तक स्वास्थ्य सेवा की बात है अध्यक्ष महोदय, इस बीमारी के टोटल मरीज अभी तक पटना के चाहे पटना सिटी अस्पताल हो, चाहे पी०एम०सी०एच० हो, चाहे एन०एम०सी०एच० हो, जो टोटल मरीज भर्ती हुए हैं, उनकी कुल संख्या 806 है और कुल मरने वालों की संख्या अध्यक्ष महोदय, 80 है। इसमें 22 मरने वाले बच्चे हैं, जिसमें एक वर्ष से तीन वर्ष के

बच्चे है। लेकिन अध्यक्ष महोदय, पिछले पांच वर्षों का रेकर्ड आप देख लें कि यदि 100 बच्चे भर्ती होते हैं तो एवरेज 8-10 की मृत्यु हो जाती है, लेकिन 806 में 22 की मृत्यु हुयी है, लेकिन अध्यक्ष महोदय, मृत्यु छोटे की हो, या बड़े की हो, यह चिन्ता की बात है और अध्यक्ष महोदय, हमें जैसे ही मालूम हुआ, हम लोग पटना सिटी गये, हमारे साथ सिविल सर्जन थे, डायरेक्टर इन चीफ थे, स्वास्थ्य आयुक्त थे, पटना के कलक्टर थे और कारपोरेशन के लोगों को लेकर वहां गये। हमारे साथ ग्रामीण विकास मंत्री श्री वृषिण पटेल जी भी थे। वहां जाकर सफाई के लिये एक कमिटी हमने बनायी, मजदूरों को बाहर से मंगाया, ट्रेक्टर की व्यवस्था की गयी और सफाई का काम शुरू किया गया। तीस हजार लोगों को हैजा का टीका दिया गया। यह अभियोग लगाना की दवा नहीं है, गलत है। दवा की व्यवस्था है, कंट्रोल रूप बनाकर हमने बेड आइडेन्टीफाई किया है। हैजा के मरीजों के लिये पी॰एम॰सी॰ एच॰ और एन॰एम॰सी॰एच॰ में बेड आइडेन्टीफाई किया है भोजन और दवा की व्यवस्था कर रहे हैं। हमारे किसी पदाधिकारी में कोई मतभेद नहीं है। इसके रोकथाम के लिये कारगर कदम उठाया गया है और इसी के परिणाम स्वरूप आज टोटल पटना के अस्पतालों में मात्र 86 आदमी भर्ती हैं। इसका माने है कि उसमें सुधार हुआ ? सुधार हो रहा है, सफाई हो रही है। इस तरह का बेबुनियाद इलजाम लगाकर सरकार को बदनाम करने की साजिश हो रहे है-सरकार इसको मुस्तैदी के साथ फेस करेगी। यदि आप इसमें सहयोग देना चाहते हैं तो हम उसका स्वागत करते हैं। जनतांत्रिक

और प्रजातांत्रिक पद्धति में हमारा और आपका फर्ज है, कर्त्तव्य है कि मिलकर इस महामारी का मुकाबला करें। लेकिन आप इसका राजनीतिक लाभ लेने की कोशिश नहीं करें। कम से कम पांच वर्ष आप इन्तजार कीजिये और पांच वर्षों के बाद मैदान में हम और आप जायेंगे और जनता फैसला करेगी।

(सदन में शोरगुल)

श्री सूरज मंडल : अध्यक्ष महोदय, पटना और उसके आसपास जो लोगों के मरने के बारे में या जिस विषय पर यहां चर्चा की जा रही है उस चर्चा से ऐसा लगता है कि लोग दिल और दिमाग से इस पर विचार करने के लिए नहीं बल्कि जितने लोगों ने अपने विचार रखें वे अखबारों के हवाले के लिए ही रखे है मैं अखबार वालों को धन्यवाद देना चाहता हूं कि सबसे पहले अखबार के द्वारा इसकी सूचना सरकार को मिली।

(कांग्रेस की ओर से शोरगुल)

आप लोगों को भी अखबार के द्वारा ही मालूम हुआ है और आज आप लोग बहुत चिन्तित हैं, डाक्टर साहब स्टेटमैन का हवाला दे रहे हैं लेकिन तीन बार डॉ० साहब बिहार के मुख्यमंत्री बने हैं

(शोरगुल)

मैं आपके नेता से पूछना चाहता हूं कि उस समय भी यह घटना घटी थी या नहीं। पटना के बारे में कोई नई बात तो नहीं हुई है। पटना के अन्दर में जल-जमाव की जहां तक बात है और पी०एम०सी०एच० की जहां तक बात है।

श्री रणजीत सिंह : यें सरकार के समर्थन में बोल रहे हैं।

श्री सूरज मंडल : मैं जानता हूं कि आप लोग सब बूथ लूटेरे हैं। कोई जनता की सेवा करने नहीं आये है।। इसलिए आप जनता की भावना की कद्र कीजिए। जनता मर रही है और आप लोग मजाक कर रहे हैं यह कितनी शर्म की बात है। अभी एक माननीय सदस्य ने कहा कि आप पटना में रहते हैं और एक दिन देखने इलाके में नहीं गये तो 42 साल तक आप लोग शासन में थे तो आप लोग पटना को क्या पटना नगर निगम को पटना नरक निगम बना कर रखा है।

(कई माननीय सदस्य कहने लगे कौन बनाकर रखा है।)

ये टोपीधारी का काम है।

(शोरगुल)

अध्यक्ष : एक-एक टोपी दोनों तरफ है।

(माननीय सदस्य श्री सूरज मंडल कांग्रेस दल की ओर इशारा करते हुए कहने लगे ये खादी टोपी वालों का काम है)

श्री सूरज मंडल : अध्यक्ष महोदय, इनको इसकी कोई चिन्ता नहीं हैं। पटने में हैजा हुआ है इसके बारे में इनको कोई चिन्ता नहीं है।

श्री विजय कुमार सिंह : अध्यक्ष महोदय, ये हैजा पर बोल रहे हैं ?

श्री सूरज मंडल : आप लोगों की वजह से हैजा हुआ है। आप लोगों की वजह से सफाई करने वाले मजदूरों की

हड़ताल की वजह से ऐसा हुआ है। पटना नगर निगम के बड़े-बड़े मकान वाले 20-20 हजार का जो टैक्स है घूस देकर 5 हजार टैक्स लिखवाया है। अध्यक्ष महोदय, ये लोग नहीं चाहते हैं कि पटना के अन्दर जो बीमारी फैली है उस पर विचार हो। ये लोग राजनीति की बात करना चाहते हैं और अपनी बातों को अखबारों में ले जाना चाहते हैं। ये लोग हल्ला कर के सरकार को बदनाम करना चाहते हैं वह इनका षड़यंत्र है। कल डॉक्टर साहब कह रहे थे कि लालू जी आप एक साल से ज्यादा नहीं रहियेगा तो डॉ० जगन्नाथ मिश्र हैजा के लिए चिन्तित नहीं है इनको चिन्ता है कि इस सरकार को कैसे बदनाम कर दें और यह सरकार कैसे गिर जाये और हम गद्दी पर बैठ जायें। लेकिन आज मानवता के नाते सब लोगों को मिलकर चाहे वह बीमारी हैजा हो, या दूसरा जिस बीमारी से लोग पीड़ित है उसके बारे में सारे लोगों को राजनीति से ऊपर उठकर सब तरह से मदद करनी चाहिए। इस बीमारी से मरने के लिए दोषी पदाधिकारी/कर्मचारी जो भी जिम्मेवार हों, उनको अगर सरकार निष्काषित करना चाहती है तो उसमें सबको मदद करनी चाहिए लेकिन राजनीतिक लाभ उठाने के लिए ये लोग उनके पक्षधर हैं। जो नगर निगम में बिना काम के लिए पैसा लेते हैं उनके पक्षधर है।, जो लोग मकान का टैक्स नहीं देते है। उनके ये पक्षधर है। इसलिए सरकार को बदनाम करने के लिए इनका षडयंत्र हो रहा है। इसलिए मैं सरकार से कहना चाहता हूं कि आपने इसमें बड़ी तत्परता दिखलाई है। पटना के अन्दर दवाई छिड़काव का काम, सुधार का काम तेजी से हुआ है इस वास्तविकता को स्वीकार करना चाहिए। सरकार ने इस पर काबू पाने के लिए तत्परता से प्रयास किया है लेकिन विरोधी दल के नेता की हैजा की

बीमारी दूर करने का नहीं बल्कि सरकार को खत्म करने की चिन्ता है। मैं इन्हीं शब्दों के साथ बैठ जाना चाहता हूं।

श्री रामलखन सिंह यादव : अध्यक्ष महोदय, मुझे अफसोस है कि इस सदन में राजनीति लाभ उठाने की चेष्टा की गयी है। पुनः मैं आपसे आग्रह करूंगा कि हमारे दल के नेता डा० मिश्र ने जो बातें प्रारम्भ में कहीं है इस विषय में उस विषय पर हम लोग न तो राजनीति करना चाहते है। न राजनीति लाभ उठाना चाहते है। बल्कि मानवता का तकाजा है कि सब मिलकर जो महामारी आयी है उसको कैसे दूर करें इस पर विचार करें। सब लोग एक दूसरे के सहयोगी बनें। महोदय, मैं मानता हूं कि स्वास्थ्य मंत्री रघुनाथ जी बहुत समझदार हैं लेकिन उन्होंने प्रारम्भ में ही कहा कि हमें विरासत में मिला है, भ्रष्टाचार, विरासत में मिली है महंगाई, विरासत में मिली है, बहुत चीजें और साथ-साथ हैजा भी इनको विरासत में ही मिली है।

मैं बहुत ज्यादा नहीं कहना चाहता लेकिन दो-तीन बातें कहना चाहता हूं। कुछ लोगों ने राजनीति की चर्चा की, कौन कहां घूमने गये, यह मैं नहीं कहना चाहता। हमारे शहर के तीन माननीय विधायक हैं, एक हैं, श्री मोदी जी, जो शहर में इससे जूझ रहे हैं। दूसरे माननीय विधायक हैं श्री रामानन्द यादव जी, अभी वे सदन को छोड़ करके हैजा से ग्रसित लोगों की सेवा में लगे हुए हैं। एक हैं भारतीय जनता पार्टी के और दूसरे है। जिन्होंने कोंग्रेस पार्टी को नहीं, कांग्रेस संस्था को ज्वायन किया है, समाज सेवी हैं और तीसरे कौन हैं, जिनके बारे में हम-आप सभी लोग अखबारों में पढ़े होंगे कि मालसलामी थाना में दर्ज कराया गया है कि हमारे विधायक लापता है। जब से हैजा फैला है तब से। वे कौन दल के हैं,

इसे आप बतलायें। इससें पता चलता है कि आज महामारी के समय में कौन दल के विधायक, उनके कार्यकर्त्ता कितनी मुस्तैदी से काम कर रहे हैं?

हम माननीय मुख्यमंत्री, भाई लालू प्रसाद जी से कहना चाहते हैं कि आप इसपर ध्यान दें और इन बीमारियों से पहले आप निबटें नहीं तो कहीं ऐसा न हो जाय कि इस बीमारी के चपेट में हम सभी चले जायं।

स्पीकर महोदय, आप आज स्पीकर के आसन पर बैठे हैं, अगर आप इस आसन पर नहीं रहते तो आज इस बीमारी के खिलाफ आपकी आवाज बुलन्द होती। आज इस शहर के लिये अफसोस की बात है, आप जैसे व्यक्ति की आवाज बुलन्द होते हुए भी आप का मुंह बंद है। यहां से लोग अपने-अपने घर चले जायेंगे लेकिन हम और आप कहां जायेंगे, यहां के रहने वाले लोग कहां जायेंगे, मैं डा॰ जगन्नाथ मिश्र जी को धन्यवाद देना चाहता हूं कि उन्होंने अपनी ओर से, पटना के सारे निवासियों की ओर से इस अहम विषय को सदन में लाकर सरकार का ध्यान आकृष्ट करने का प्रयास किया है। माननीय मंत्री, श्री रघुनाथ झा जी ने कहा कि पटना कॉरपोरेशन में 2700 मजदूर बहाल हैं और उसमें से ज्यादा लोग बड़े बड़े लोग है।। आप बड़े-बड़े लोगों पर छापा मार रहे हैं तो आप ऐसे मजदूरों को भी हटाइये, ऐसे मजदूरों को हटाने में आपको क्या दिक्कत है? आप कब हटायेंगे? जब लोग मर जायेंगे तब? लेकिन मैं आपसे कहना चाहता हूं कि 2700 मजदूर नहीं हैं बल्कि 3500 मजदूर हैं उसमें से एक तिहाई मजदूर ऐसे है। जो काम नहीं करते हैं, इसके बारे में आप सोचिए। आज कॉरपोरेशन क्या करेगा? वहां पर कोई आदमी नहीं है। आप सफाई की बात करते हैं तो आप

सभी जगह को छोड़ दीजिए, आज आर०ब्लॉक की क्या स्थिति है ? इसको आप देखिए, वहां पर दोनों तरफ किस तरह से गंदगी है। अभी वहां पर बिलीचिंग पाउडर दिया गया है। गंदगी से बीमारी फैलती है। आप और जगह छोड़ दीजिए, एम०एल०ए० क्वार्टर से ही सफाई करने का श्रीगणेश कीजिए। अगर एम०एल०ए० क्वार्टर की गंदगी की सफाई हो जाए तो मैं समझता हूं कि शहर का बहुत बड़ा उद्धार हो जायगा।

अध्यक्ष महोदय, कहा गया कि 816 आदमी भर्ती किये गये, जिसमें से 80 आदमी मर गये और उनमें से पांच बच्चे थे तो क्या बच्चे की जान नहीं होती है ? माननीय मंत्री, श्री रघुनाथ झा जी, हमलोग राजनीति नहीं करते, आपलोग राजनीति कर रहे हैं। हम आपसे पुनः आग्रह करना चाहते है। कि पटना के नागरिकों के साथ आप खेलवाड़ न करें। कहा गया कि मोदी जी हड़ताल कराये है। लेकिन यह हड़ताल किसी पार्टी ने नहीं कराया, यहां के नागरिकों ने किया है आप आज पटना सिटी में जाइये, लल्लू बाबू का कूचा जाकर देखिए, वहां पर क्या स्थिति है। सबसे ज्यादा बीमारी का कारण विभिन्न मुहल्ले में फैली गंदगी है।

श्री वासुदेव सिह : अध्यक्ष महोदय, आपने इनको दो मिनट में कहने के लिये कहा था लेकिन पांच मिनट से भी ज्यादा हो गया।

अध्यक्ष : आप बैठ जाइये, अब ये समाप्त करने वाले हैं।

श्री रामलखन सिंह यादव : मैं कहना चाहता हूं कि वहां पर जाकर देखिए कि क्या स्थिति है ? हॉस्पिटल के

सामने, दरियापुर के बगल का जो रोड है, उसके चारों तरफ इतनी गंदगी है कि शहर में चलना मुश्किल हो गया है। आज जो शहर की स्थिति है, वह किसी पार्टी का सवाल नहीं है। ऐसी स्थिति में हम सबों को मिलकर इस बीमारी को रोकने का काम करना चाहिए। हमारे माननीय सदस्य, श्री सूरज मंडल जी पटना छोड़कर संथालपरगना चले जायेंगे, लोग अपने-अपने घर चले जायेंगे लेकिन हमारे माननीय सदस्य, श्री मोदी जी, मित्र ही नहीं, नजदीकी हैं, वे कहां जायेंगे ? हमारे एक माननीय सदस्य हैजा पर नहीं बल्कि जौंडिस पर बोल रहे थे, इसको हैजा न कहकर जौंडिस में बदल दिया। तो मैं यही कहना चाहता हूं और आप सबों से आग्रह करना चाहता हूं कि जितनी मुस्तैदी से हो सके इस बीमारी की रोकथाम के लिये सफाई और दवा-दारु की व्यवस्था की जाय। सफाई और दवा देकर, इस बीमारी की रोकथाम करने का उपाय किया जाय।

श्री उपेन्द्र प्रसाद वर्मा : अध्यक्ष महोदय, एक आदमी को कौन सी बीमारी है, इसको जांच कर एक्सपर्ट ही कह सकता है। किसी को टायफायड हो जाता है तो कोई कहता है कि इसको बिकोलाई है, लेकिन जांच के बाद ही यह पता चलता है कि उस व्यक्ति को कौन सी बीमारी है।

श्री रामदेव वर्मा : अध्यक्ष महोदय, हमलोगों को बोलने के लिये कोई मौका नहीं दिया गया। हमलोगां को भी समय दिया जाय।

श्री वासुदेव सिंह : अध्यक्ष महोदय, हमें कम से कम दो मिनट का समय दिया जाय।

अध्यक्ष : ठीक है, आप दो मिनट में समाप्त कर देंगे।

श्री वासुदेव सिंह : अध्यक्ष महोदय, पटना में हैजा एपीडेमिक रूप से फैल गया है। सरकार इसकी रोकथाम के लिये सक्रिय है, कुछ सफलता भी मिली है लेकिन सरकार की और अधिक सक्रिय होना चाहिए ताकि इसकी रोकथाम की जा सके। माननीय मुख्यमंत्री जी युवा हैं और युवा व्यक्ति ज्यादा संवेदनशील होता है और पुराने लोगों से ज्यादा संवेदनशील होता है। अधिक संवेदनशील के आधार पर माननीय मुख्यमंत्री जी इस महामारी को रोकने का प्रयास करें ताकि निकट भविष्य में इस तरह की महामारी न फैले। जहां तक संवेदनशीलता का सवाल है हमारे मुख्यमंत्री युवक हैं और युवक ही संवेदनशील होते हैं। मुख्यमंत्री जी निश्चित रूप से संवेदनशील व्यक्ति हैं। बूढ़ें आदमी उपदेश देते हैं कि युवा आदमी ज्यादा संवेदनशील हुआ करता है। मैं स्वास्थ्य मंत्री और नगर विकास मंत्री से कहना चाहता हूं कि इस बीमारी को एकेडेमिक करार करके इसपर रोकथाम करने का प्रयास करे। हमारे मुख्यमंत्री 74 के आन्दोलन के उपज हैं जो पुराने-से-पुराने सदस्य है। वे निश्चित रूप से प्वाइन्ट ऑफ डेथ की चर्चा करेंगे और ऐसा विश्वास है कि हैजे से जो रोग फैला है उसमें सुधार की स्थिति आयी है। सरकार को और सक्रिय होने की जरूरत है।

श्री वृषिण पटेल : अध्यक्ष महोदय, बहुत देर से मैं माननीय सदस्यों की बातें सुन रहा था। बहुत देर से मेरा मतलब है कि 40 मिनटों से इनकी बातें मैं सुन रहा हूं और नेता विरोधी दल ने किन-किन सवालों को उठाया, मैंने अपने सहयोगियों से उसकी जानकारी ली है। माननीय विरोधी दल के नेता ने जो कहा कि सरकार इस बीमारी से बेखबर है, सरकार ने इस बीमारी पर रोकथाम के लिए कोई व्यवस्था

नहीं की है, मैं बहुत अदब से उनसे अर्ज करना चाहता हूं कि "दामन के तार-तार पर हैं बारिसे नजर" और ये कहते हैं कि कोई देखता नहीं। अध्यक्ष महोदय, यह विवाद का विषय दो-तीन दिनों से इस सदन में चलते आ रहा है कि हैजा से लोग मरे। दो-तीन दिनों से यह एक मुद्दा इस सदन में बना हुआ है। अध्यक्ष महोदय, लोग कौलरा से मरे हैं या गैस्टोइन्ट्राइटिस से मरे हैं, इन विवादों में मैं नहीं जानना चाहता हूं 50 मरे या 100 मरे मैं इन विवादों में भी नहीं जाना चाहता हूं। सरकार स्वीकार करती है कि चाहे गैस्ट्रोइन्ट्राइटिस से हो, चाहे वह कौलरा से हो, कुछ लोग राजधानी में अवश्य मरे है।। अध्यक्ष महोदय यह स्थिति क्यों बनी, कैसे बनी, जबतक इन तमाम बातों पर इस सदन में जिक्र नहीं करेंगे तबतक बात स्पष्ट नहीं हो पायेगी। जनता दल की सरकार बनी और चन्द ही दिनों के बाद मेरा ख्याल है कि पन्द्रह या एक महीने के अन्दर ही पटना में पटना नगर निगम और जल पर्षद के लोग हड़ताल पर चले गये। मैं शुक्रगुजार हूं अपने मुख्यमंत्री जी का और मैं जो कह रहा हूं वह कोई अतिश्योक्ति नहीं है, मैंने जाकर मुख्यमंत्री से कहा। मुख्यमंत्री जी खुद गरीब परिवार से आते है। उनके फटेहाली हालत पर मुख्यमंत्री जी ने कहा कि हमारे प्रदेश में सबसे निकृष्ट कार्य करनेवाले ये लोग हैं, स्थानीय निकाय के ये लोग हैं और उनकी हालत बहुत दयनीय है, बिना उनके लिए कोई उपाय सोचे प्रदेश का कोई कल्याण नहीं होनेवाला है। मुख्यमंत्री जी ने उनकी मांग को यानि उनकी नौकरी सरकारी कर्मचारियों के समतुल्य मान्यता प्रदान कर दी। मुख्यमंत्री ने यह घोषणा कर दी। बात समाप्त हो गयी और हड़ताल भी समाप्त हो गया। मैं नेता, विरोधी दल से अनुरोध करूंगा और दूसरे माननीय सदस्यों से

अनुरोध करूंगा कि किसी बात को जानने के लिए, कौन बात कैसे पैदा हुई, उसकी गहराई में जाना पड़ेगा। अध्यक्ष महोदय, मैं दुःख के साथ कह सकता हूं कि कुछ ही दिनों के बाद ये कर्मचारी फिर वेवजह हड़ताल पर चले गये। अध्यक्ष महोदय, मैंने कर्मचारियों को, अपनने पदाधिकारियों, हमारे चीफ एक्जीक्यूटिभ औफिसर है।, उनको भेजा कि कर्मचारियों को बुलाइये क्योंकि वे बेवजह हड़ताल पर क्यों गये। हमारे चीफ एक्ज्यूकीटिभ औफिसर ने कहा कि कर्मचारीगण यहां आकर बात करने को तैयार नहीं हैं। मैं नगर विकास मंत्री हूं, मैं मंत्री होते हुए भी गाड़ी लेंकर खुद कई-एक कार्यालयों में पहुंचा। हमारी सरकार यह महसूस कर रही थी कि वर्षात का दिन आनेवाला है, यदि यह हड़ताल जारी रहा तो यकीनन तौर पर पटना के लोगों की हालत दयनीय होनेवाली है। इसलिए सरकार चिंतित थी। हड़ताल के क्रम कें हड़ताली कर्मचारियों ने नालों को जाम कर दिया, जहां से पानी सप्लाई होता है, उस पम्प को तोड़-मरोड़ कर दिया, जहां से बिजली सप्लाई होती है।

(शोरगुल)

अध्यक्ष महोदय, जाने दीजिए, इन बातों को हड़ताल समाप्त हो गयी। इसी दरम्यान कुछ लोगों के मरने की सूचना सरकार को मिली। ज्योंही यह बात जानकारी में आयी, मैं और स्वास्थ्य मंत्री, श्री रघुनाथ झा जी दोनों आदमी पटना सिटी गये, उस समय इस बीमारी का प्रभाव वार्ड नम्बर-31, वार्ड नम्बर-33 और वार्ड नम्बर-34 में व्यापक रूप से था।

अध्यक्ष महोदय, मैं बहुत जबावदेही के साथ और बहुत मजबूती के साथ यह बात कहना चाहता हूं कि उसके बाद मैं

लगातार उन इलाकों में घूमता रहा हूं और उस इलाके के गली कूचों में बराबर गया हूं। मेरे घूमने के दरम्यान हमारे सहयोगी दल के माननीय सदस्य श्री सुशील कुमार मोदी जी भी घूम रहे थे।

श्री राम ज़तन सिन्हा : यह आपकी जबावदेही है।

श्री वृषिण पटेनल : अगर इस तरह से व्यवधान होता रहेगा तो मैं शायद आनी बात पूरी नहीं कर पाऊंगा।

मेरे साथ आइ०पी०एफ० के कार्यकर्त्ता भी वहां पर थे। इन लोगों की व्यवस्था के संबंध में मैं देख रहा था कि वहां चूना और ब्लीचिंग पाउडर का छिड़काव हो रहा है या नहीं। मैं दावे के साथ कहता हूं कि ये लोग (कांग्रेस के लोग) कभी उन इलाकों में नहीं गये। अगर ये दौरा किये होते तो कभी ये बातें नहीं कहते कि वहां कोई लाभ नहीं हुआ है।

श्री रामलखन सिंह यादव : कृपा कर आप जिम्मेवारी के साथ बोलिये।

श्री वृषिण पटेल : मैं पूरी जिम्मेवारी के साथ बोल रहा हूं। यदि मेरी बात गलत हो तो मैं सदन से इस्तीफा दे सकता हूं। मैं उस समय की बात कह रहा हूं। जिस समय बीमारी शुरू हुई थी और मैं फिर अदब से कहता हूं कि अगर माननीय सदस्य वहां गये होते तो ऐसी बात कभी नहीं कहते।

(शोरगुल)

श्री रामलखन सिंह यादव : आपकी पार्टी के कितने लोग गये थे? आप वहां खुद जाइये।

(शोरगुल)

श्री जगन्नाथ मिश्र : मैं व्यवस्था के प्रश्न पर खड़ा हुआ हूं। हमलोग सरकार की कुव्यवस्था को ध्यान में रखते हुये एवं महामारी पर नियंत्रण नहीं किये जाने की वजह से सदन का बर्हिगमन करते हैं।

इस अवसर पर कांग्रेस पार्टी के माननीय सदस्यों ने सदन का बर्हिगमन किया।

श्री रघुनाथ झा : अध्यक्ष महोदय, इसको राजनीतिक रूप कौन दे रहा है, यह नेता विरोधी दल और कांग्रेस के लोगों के सदन से बर्हिगमन से स्पष्ट हो गया है।

(सदन में शोरगुल)

श्री वृषिण पटेल : अध्यक्ष महोदय, जो लोग यह कहते हैं कि सरकार ने कोई व्यवस्था नहीं की तो मैं कहना चाहता हूं कि सरकार ने सफाई के लिये 2631 सफाई मजदूर लगाये जो कार्यरत हैं। इनमें हमारे निगम के भी लोग हैं, कुछ बाहर के मजदूर हैं और अगल-बगल के जिलों से भी कुछ मजदूर बुलाये गये हैं। सरकार का यह भी निदेश है कि जितने मजदूरों की आवश्यकता होगी उतने मजदूरों को हम लगायेंगे। पैसा के लिये सरकार के पास कोई कमी नहीं है। इसके प्रबंधन के लिये सरकार के पास पैसे की कमी नहीं है। सरकार किसी के जीवन रक्षा के लिये, हर तरह से, हर ढंग से तैयार है। अध्यक्ष महोदय, जहां 2631 सफाई मजदूर कार्यरत हैं, वहां पर 66 ट्रैक्टर भी सफाई व्यवस्था के लिये पटना शहर में कार्यरत हैं। 840 मन चूना, 38 क्विंटल गैमेक्सीन पाउडर गलियों और नालियों में छींटे जा चुके है।। 3200 कुंवों में ब्लीचिंग पाउडर का छिड़काव किया गया है। पटना में करीब 62 जलापूर्ति योजनायें चल रही हैं उन 62

जलापूर्ति योजनाओं में ब्लीचिंग पाउडर डालने का काम किया गया है। अध्यक्ष महोदय, सफाई के काम के सर्वेक्षण के लिये सहायक अवर निरीक्षक, पुलिस, सिविल डिफेंस के पदाधिकारी और साथ ही जो सेवा निवृत निगम के पदाधिकारी हैं, हमलोगों ने लगा रखा है। पटना सिटी में 22, नूतन राजधानी में 5 तथा बांकीपुर अंचल में कुल 32 टीका केन्द्र खोले गये हैं और 25 टीकाकार घूम-घूमकर लोगों को टीका लगाने का काम कर रहे हैं। जन-सम्पर्क के माध्यम से, पर्चा के माध्यम से, रेडियों के माध्यम से लाउडस्पीकर के माध्यम से पटना में प्रचार कराया जा रहा है कि पानी उबाल कर पीएं, सड़ी गली चीजों का उपयोग न करें, मछली का परित्याग करें। अध्यक्ष महोदय, इस प्रकोप को देखते हुए कुछ दूसरे जिलों से भी सरकार को शिकायतें मिली हैं और सरकार ने यह आदेश निर्गत किया है कि दूसरी जगहों में भी जहां पर इस बीमारी का प्रभाव है, तमाम जो प्रीकॉसनरी मेजर हो सकते हैं, सरकार को लेना चाहिये, वे लिये जा रहे हैं। स्वास्थ्य मंत्री ने बताया कि पी०एम०सी०एच० में 51 और एन०एम०सी०एच में 20, पटना सिटी अस्पताल में 50 अलग से बेड्स की व्यवस्था की गई है और दवा की भी व्यवस्था की गई है। इतने कामों के बावजूद लोगों का यह कहना कि सरकार बेखबर है। अध्यक्ष महोदय, उनलोगों से कहा कि कुछ काम नहीं किया गया है। आप इलाके में चले जाइये क्योंकि इस तरह से बोलेंगे तो लोगों को यह लगेगा कि यह अतिशयोक्ति बोल रहा है। लेकिन लोगों ने इस सफाई एवं व्यवस्था को देखकर कहा कि 43 वर्षो में भी ऐसी सफाई और ऐसी व्यवस्था कभी देखने को नहीं मिली है जितनी व्यवस्था इस सरकार ने की है। इसलिये अध्यक्ष महोदय, मैं

अर्ज करूंगा, निवेदन करूंगा कि सरकार संवेदनशील है, सरकार पूर्णतः अपनी जबावदेही को निभाया है और भी जिस तरह की आवश्यकता पड़ेगी, करेगी, यह बीमारी नियंत्रण में है, लोग खामख्वाह खौफ पैदा करने की कोशिश कर रहे हैं। माननीय सदस्यगण आप आयें, सरकार के साथ सहयोग करें, कंधे से कंधे मिलाकर इसकी रोकथाम में आप भी आये, जनता से सम्पर्क करें, इनको विश्वास में लेकर इस प्रदेश का और इस पटना कैपिटल का विकास करें और इस रोग से मुक्ति दिला सके। इन्हीं शब्दों के साथ में अपना भाषण समाप्त करता हूं।

सभा की बैठक, बुधवार तिथि 11 जुलाई, 1990 के 11 बजे दिन तक के लिये स्थगित की जाती है।

पटना :　　　　　　　　　　　　चन्द्रशेखर शर्मा

तिथि : 10 जुलाई, 1990 ई०　　　　　　　　सचिव

बिहार विधान-सभा

दैनिक निबंध :

मंगलवार, तिथि 10 जुलाई, 1990 ई०

हैजे की महामारी से चार बच्चों की मृत्यु की चर्चा तथा मुआवजे की मांग :

सभा की बैठक प्रारम्भ होते ही माननीय सदस्य, श्री कुमुद रंजन झा ने समाचार पत्र का हवाला देते हुए सरकार का ध्यान इस आशय की खबर की ओर आकृष्ट किया कि पटने में हैजे से चार बच्चों की फिर मौत हो गई है। इस समाचार से आहत भाजपा के सदस्यों, यथा सर्वश्री समरेश सिंह, सुशील कुमार मोदी, खगेन्द्र प्रसाद, जवाहीर प्रसाद, उपेन्द्रनाथ दास, स्वामीनाथ तिवारी एवं ज्ञानेश्वार यादव ने सदन के "वेल" में आकर उक्त बच्चों की मौत के एवज में मुआवजे की मांग सरकार से की।

अध्यक्ष महोदय ने हस्तक्षेप करते हुए कहा कि उपर्युक्त विषय पर चर्चा के लिए समय निर्धारित है, अतः इसकी चर्चा माननीय सदस्यगण यथा निर्धारित समय पर करेंगे। अभी प्रश्नकाल चलेगा।

कार्यस्थगन प्रस्ताव की सूचनाएं (अमान्य) :

श्री रामजतन सिन्हा, श्रीमती ज्योति, श्री रघुवंश प्रसाद सिंह, श्री कुमुद रंजन झा, श्री सूर्यदेव सिंह, श्री कृष्णदेव सिंह यादव, श्री अवधेश राय एवं श्री रामविनोद पासवान तथा श्री सुशील कुमार मोदी से प्राप्त आठ कार्यस्थगन प्रस्ताव की सूचनाओं को अध्यक्ष महोदय ने सदन में नियमानुसार अमान्य घोषित किया।